# पंचम अध्याय

# सांराश, निष्कर्ष एवं सुझाव

सांराश

समस्या कथन

शोध प्रश्न

न्यादर्श का चयन

शोध के निष्कर्ष

सुझाव

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

# पंचम अध्याय

# सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

## (5.1) सारांश –

'अनुशासन' एक ऐसा पद है जिसे विभिन्न अर्थों में प्रारंभ से ही लोगों ने प्रयोग किया है। 'अनुशासन' पद का अँगरेजी रूपान्तर Discipline है जो Disciple से बना है तथा Disciple का अर्थ होता है शिष्य या चेला। शिष्य अपने गुरू से उन तरीकों, नियमों एवं विधियों को सीखाता है जिनसे उसकी जिन्दगी में खुशी एवं कर्तव्यनिष्ठा का गुण विकसित हो सके। इस अर्थ में हॉफमैन ने अनुशासन को परिभाषित करते हुए कहा है कि सामाजिक समूह द्धारा अनुमोदित नैतिक व्यवहार को बालकों को सिखाना ही अनुशासन है।

रिली तथा लेविस ने अनुशासन की एक अति आधुनिक एवं विस्तृत परिभाषा दी है जिससे करीब–करीब सभी आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी सहमति व्यक्त की है। इनके अनुसार, "कक्षा में व्यवहार–संबंधी समस्याओं से निपटना तथा उसका निवारण करना ही अनुशासन है।... वर्तमान समय में अनुशासन से तात्पर्य नियंत्रण (विशेषतः आत्मनियंत्रण), बोध, उद्देश्य–उन्मुखी, निर्देशात्मक, निवारण एवं संगठित उदात्तीकरण से होता है।"

### अनुशासनके उद्देश्य एवं लक्ष्य

आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अनुशासन के मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य निम्नांकित हैं–

**आत्मनियंत्रण की क्षमता विकसित करना –** अनुशासन का सबसे मुख्य उद्देश्य बालकों में आत्म–नियंत्रण की क्षमता उत्पन्न करना है। इसके अभाव में छात्र तरह–तरह के समस्यात्मक व्यवहार जैसे चोरी करना, लड़ाई करना, धोखेबाजी करना आदि सीखकर अनुशासनहीनता की समस्या खड़ी कर देते हैं। अतः, अनुशासन का मुख्य उद्देश्य बालकों में आत्म–नियंत्रण का शीलगुण विकसित करना होता है तथा उन्हें आत्म–अनुशासित कर देना होता है ताकि वे

अपने-आपको इस योग्य बना सकें कि वातावरण की आवश्यकता के अनुसार एवं समाज के मानकों के अनुकूल व्यवहार करने में हर परिस्थिति में सक्षम हों।

(vi) **व्यवहार-संबंधी सस्याओं का निवारण-** अनुशासन का एक उद्देश्य छात्रों की व्यवहार-संबंधी समस्याओं का निवारण करना है। कक्षा में शिक्षक छात्रों के सामने अच्छी सामग्रियों को समझने लायक भाषा में उपस्थित कर तथा उनकी आवश्यकताओं एवं अभिरूचि के अनुरूप व्यवहार करके उनमें किसी प्रकार की शरारत या व्यवहार-संबंधी समस्या उत्पन्न करने का मौका ही नहीं देते।

(vii) **उदार मनोवृत्ति का विकास-** आधुनिक समय में अनुशासन का उद्देश्य छात्रों में स्कूल के अधिकारियों एवं शिक्षकों के प्रति तथा माता-पिता के प्रति उदार मनोवृत्ति विकसित कर सके। अतः, आजकल छात्रों को अनुशासित करने का एक लक्ष्य यह भी रहता है कि इन लोगों द्वारा दिए गए सुझावों, आदेशों एवं परामर्शों को स्वेच्छा से मानकर वे उनके अनुकूल व्यवहार करने लगें।

(viii) **छात्रों में उत्तम आचरण उत्पन्न करना** अनुशासन का उद्देश्य छात्रों में एक ऐसा आचरण एवं तौर-तरिका सिखाना होता है कि वे कक्षा के बाहर एवं भीतर दोनों ही परिस्थितियों में एक अनुशासित छात्र के रूप में देखे जा सकें। उन्हें अन्य-अन्य लोगों द्वारा एक आदर्श मॉडल के रूप में देखा जा सके।

(ix) **छात्रों की वास्तविक जिन्दगी में खुशी उत्पन्न करना एवं उत्तम समायोजन करने में मद्द करना-** -रिली के अनुसार आधुनिक स्कूल में किए जा रहे अनुशासन-संबंधी प्रयासों का एक उद्देश्य छात्रों की प्रमुख आवश्यकताओं एवं अभिरूचियों के अनुरूप व्यवहार कर उन्हें अपने वातावरण के साथ उत्तम समायोजन करने में मदद करना है। जब छात्र उत्तम समायोजन कर पाते हैं तो इससे उन्हें खुशी मिलती है और वे और भी अधिक उत्तम समायोजन करने के लिए प्रेरित होते हैं।

स्पष्टतः अनुशासन का उद्देश्य एवं लक्ष्य में आत्मनियंत्रण एवं आत्म-अनुशासन का गुण पैदा करके उन्हें एक सफलीभूत जीवन व्यतीत करने में मदद करना होता है।

## 1.2 अध्ययन की आवश्यकता–

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की महत्ता निर्विवाद है। शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक अंधकार को प्रकाश में बदलती है उसका सर्वांगीण विकास करती है किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के उत्थान हेतु आवश्यक आधारों में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

व्यक्ति विद्यालय में जब शिक्षा प्राप्त करने के लिये जाता है तो उसे वहाँ एक विशेष व्यवस्था के तहत ही शिक्षा प्रदान की जाती है। किसी भी विद्यालय में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि यह व्यवस्था सुचारू रूप से बनी रहे। शैक्षिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिये 'अनुशासन' की आवश्यकता पडती है। किसी भी विद्यालय में एक Code of ethics बनाया जाता है जिसका हर छात्र को पालन करना होता है यदि छात्रों द्वारा उसका पालन नहीं किया जाता तो उनका व्यवहार अनुशासनहीनता के दायरे में आ जाता है इससे जहाँ शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं होती वहीं समय का अपव्यय, अशांति, तनाव (गुरू शिष्य के संबंधों में, माता–पिता और संतान के संबंधों में) जैसी समस्याओं का प्रादुर्भाव होता है।

एक अनुशासित छात्र आगे चलकर समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। ऐसा नागरिक जो केवल अपने अधिकारों की बात ही नहीं करता बल्कि अपने कर्त्तव्यों का भली–भाँति पालन करना भी जानता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का होना बहुत से विकास का मूलाधार है।

शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी कक्षा में अनुशासनहीनता एवं गंभीर समस्या है इससे विद्यार्थियों में मूल्यों का सही विकास नही होता, किसी भी बात को हल्के तौर पर लेने की गलत आदत उनमें उत्पन्न हो जाती है, अगर शिक्षक अनुशासनहीनता को रोकने के लिये कोई Disciplinary action लेता है तो गुरू–शिष्य संबंध की कड़ी कमजोर हो जाती है, प्रारंभिक विद्यालय में ही अनुशासनहीनता की समस्या पर अंकुश न लगाया जाये तो विश्वविद्यालय स्तर तक यह समस्या

विकराल रूप ले लेती है। कुछ वर्ष पूर्व उज्जैन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सबरवाल की हत्या इसी समस्या का दुखद परिणाम है।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी कक्षा में अनुशासनहीनता क्यों होती है, उसके क्या संभावित कारण है, उसके उपचार क्या हो सकते है इनको जानने के लिये यह अध्ययन महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

अनुशासनहीनता अपने-आप में एक विस्तृत अवधारणा है, जब हम बात कक्षा में अनुशासनहीनता की कर रहे है तो कक्षा में छात्रों का ऐसा व्यवहार जिससे अध्ययन- अध्यापन प्रभावित हो, अभीष्ट शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति कठिन हो जाये, कक्षा की उत्तरोत्तर प्रगति में बाधा उत्पन्न हो जाये, अनुशासनहीनता के दायरे में आता है।

वास्तव में किसी भी व्यक्ति का अनुशासित व्यवहार उसके रहने वाले समाज की सांस्कृतिक प्रणाली से संबद्ध होता है। कोई कार्य उसे करने वाले व्यक्ति की दृष्टि में सही ठहराया जा सकता है परंतु समाज अपनी संस्कृति के अनुसार बताता है कि अमुक स्थान पर व्यक्ति का किस प्रकार आचरण होना चाहिये, यदि उस व्यक्ति का आचरण अमर्यादित (अर्थात् मर्यादा के विपरीत) होगा तो उसे अनुशासनहीनता माना जायेगा। इसी तरह कक्षा में विद्यार्थियों का अमर्यादित आचरण ही अनुशासनहीनता है। इस अनुशासनहीनता के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं:-

1. शिक्षक द्वारा जब पाठ को Explain किया जा रहा हो, तब ध्यान न देना।
2. शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछने पर जानबूझकर जबाव नहीं देना, उसे परेशान करना।
3. शिक्षक द्वारा जब कोई सवाल बनाने को कहा जाये तो उसे हल करने के बजाय बातें करना।

4. शिक्षक द्वारा stimulus variation method का प्रयोग करने पर अकारण हँसना।
5. जब शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखने लगे तो सीटी बजाना, दूसरों को तंग करना।
6. शिक्षक द्वारा Attendance लेने पर शोर करना।
7. कक्षा में अकारण अनुपस्थित रहना, देर से आना, समय-समाप्ति के पूर्व ही कक्षा से भाग जाना।
8. गृहकार्य करके नहीं आना।
9. कक्षागत सामग्री जैसे टेबल, कुर्सी, पंखे, बल्ब आदि में तोड़-फोड़ करना।

© Original Artist
Reproduction rights obtainable from
www.CartoonStock.com

Search ID: abe0096

"My fortune says, 'You will be successful in getting students to control their behavior, if you first control your own behavior'."

## (5.2) समस्या कथन :-

**"कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याएं : एक अध्ययन"**

## (5.3) शोध प्रश्न :-

प्रस्तुत शोध की प्रकृति एवं चयनित चरों को ध्यान में रखते हुये इस शोध हेतु शोध प्रश्नों का निर्माण किया गया है। जो इस प्रकार हैं –

1. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता है ?
2. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें गृह–कार्य की गुणवत्ता से संबंधित है ?
3. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण दिये गये गृह–कार्य के मूल्यांकन में पारदर्शिता से संबंधित है ?
4. क्या कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण बनती है ?
5. क्या कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या कक्षा–प्रबंधन में व्यवधान उत्पन्न करती है ?
6. क्या कक्षा में छात्रों की अधिकता से उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं का निराकरण शिक्षक द्वारा किया जा सकता है ?
7. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं को शिक्षक अपने शिक्षण–कौशल से नियंत्रित कर सकता है ?
8. कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं में छात्रों की शैक्षिक–पृष्ठभूमि का किस सीमा तक योगदान है ?
9. क्या विद्यालयीन प्रशासन कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति सजग है ?
10. विद्यालयीन प्रशासन का कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति क्या दृष्टिकोण है ?

## (5. 4) न्यादर्श का चयन :-

न्यादर्श के चयन हेतु शोधकर्त्ता द्वारा कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) से जिले में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की

सूची प्राप्त की गई। इनमें से पांच शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

चयनित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पांच प्राचार्यो का चयन किया गया।

चयनित विद्यालयों में अध्यापनरत लगभग 25 शिक्षकों (स्त्री एवं पुरूष) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से लॉटरी पद्धति द्वारा किया गया।

चयनित विद्यालयों की कक्षा नवमीं एवं दसवीं में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयन किया गया।

चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों में से 15 अभिभावकों का चयन किया गया ।

इस प्रकार न्यादर्श में 5 प्राचार्यो, 25 शिक्षकों, 100 विद्यार्थियों और 15 अभिभावकों का चयन किया गया।

## (5.5) शोध के निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें पायी जाती हैं।
2. अनुशासन संबंधी समस्याओं में गृह–कार्य की गुणवत्ता, अनियमितता एवं मूल्यांकन एक प्रमुख कारण हैं।
3. विद्यालयीन प्रशासन भी कक्षा या विद्यालय में विद्यार्थियों द्वारा उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं के प्रति कठोर दृष्टिकोण रखते हुये उनका निराकरण करने का प्रयास करता है।
4. कक्षा नवमीं एवं दसवीं के विद्यार्थियों के अभिभावक भी विद्यार्थियों के द्वारा अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति जागरूक है तथा शिक्षकों के दृष्टिकोण से अधिकांश सहमत रहते हैं।
5. कक्षा नवमीं एवं दसवीं के विद्यार्थियों के द्वारा अनुशासन संबंधी समस्याओं के विभिन्न कारण परिलक्षित होते हैं जिनमें गृह–कार्य की गुणवत्ता, उसके मूल्यांकन एवं सहभागी क्रियाओं की कमी विद्यार्थियों द्वारा इंगित की गई है।

6. कक्षा नवमीं एवं दसवीं में उत्पन्न अनुशासन संबंधी समस्याओं को शिक्षक अपने तरीके से टेकल करते है और समस्याओं का निराकरण कर कक्षा का संचालन सुव्यवस्थित बनाते हैं।

7. कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या का होना भी अनुशासनात्मक संबंधी समस्याओं को जन्म देता है।

8. अनुशासन संबंधी समस्यायें विद्यालय में ढ़ांचागत सुविधाओं की कमी के कारण उत्पन्न होती है।

## (5.6) सुझाव :-

**प्रस्तुत शोध के संदर्भ में कुछ सुझाव इस प्रकार है –**

1. विद्यार्थियों के लिये शिक्षक एक आदर्श व्यक्ति होता है। अतः शिक्षक का आचरण उत्तम होना चाहिये। एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को तभी अनुशासित रख सकता है जब स्वयं वह अनुशासित और मर्यादित रहे।

2. विद्यालयीन प्रशासन को अनुशासन संबंधी समस्या समस्या पर नियंत्रण हेतु सजग रहना चाहिये। प्राचार्य को एवं शिक्षकों को निष्पक्ष, न्यायप्रिय एवं ईमानदार होना चाहिये उनसे प्रेरित होकर विद्यार्थी स्वयं को अनुशासित रखते हैं।

3. कक्षा में अनुशासनहीनता को रोकने का एक सुझाव यह भी है कि कक्षा का भौतिक वातावरण उत्तम एवं आदर्श हो। कक्षा में प्रकश एवं वायु संचार का उत्तम प्रबंध हो, विद्यार्थियों के लिये बैंच, डेस्क हो। कक्षा साफ–सुथरी हो। वहां श्यामपट और चॉक आदि का भी प्रबंध हो। इस तरह के भौतिक वातावरण से बच्चे शैक्षिक कार्यक्रमों की ओर अधिक आकर्षित रहते हैं और वे किसी प्रकार की अनुशासनहीनता प्रदर्शित नहीं करते।

4. विद्यार्थियों को पाठ्येत्तर क्रियाओं में भाग लेने के लिये प्रेरित करना चाहिये। यदि विद्यालय में व्यायाम, खेलकूद,नाटक,नृत्य,संगीत, वाद–विवाद आदि में भाग लेने की पर्याप्त व्यवस्था होती है तो इससे उनमें आत्म–नियंत्रण एवं सहयोगिता की भावना उत्पन्न होती है जो उन्हें अनुशासित बनाती है।

5. शिक्षकों को अध्यापन करते समय परिस्थितियों के अनुसार आकर्षक तरीकों का प्रयोग करना चाहिये। उन्हें प्रयास करना चाहिये कि छात्र उनके व्याख्यान से ऊब एवं नीरसता का अनुभव न कर सकें।

6. शिक्षकों एवं अभिभावकों को चाहिये कि विद्यार्थियों के व्यवहारों का उचित पर्यवेक्षण करें और उनकी गलतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करावें ताकि वे उसे दोबारा न करें।

7. अभिभवकों को अपने बच्चों को यह शिक्षा जरूर देनी चाहिये कि शिक्षकों का उन्हें सम्मान करना चाहिये और उनकी बतायी गयी बातों पर अमल करना चाहिये।

8. हमारे देश में विद्यार्थियों की एक कक्षा में अधिक संख्या एक सामान्य बात हैं। शिक्षकों को इस स्थिति के लिए तैयार रहते हुए पठन-पाठन में परिस्थिति के अनुसार नवाचारों को शामिल करना चाहिए।

9. शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने तथा उनके विवेक और आशावाद को पुनः स्थापित करने का बराबर प्रयास करते रहना चाहिए।

10. कक्षा में अध्ययन के प्रति गंभीरता विद्यार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

11. विद्यार्थियों को अनुशासन संबंधी समस्याओं में दृष्टिकोण की सीमा-रेखा को समझना होगा, क्योंकि विद्यर्थियों की दृष्टि में जो अनुशासन संबंधी समस्या नहीं हैं वहीं शक्षकों की दृष्टि में अनुशासन संबंधी एक गंभीर समस्या हो सकती है।

12. विद्यार्थियों को कक्षा में अध्यापन के दौरान यदि विषय-वस्तु समझ नहीं आ रही हो तो शिक्षक से अवश्य पूछना चाहिए अन्यथा उनकी समस्या उग्र रूप लेकर अनुशासन संबंधी समस्या का कारण बनती है।

13. विद्यार्थियों को गृह-कार्य की गुणवत्ता एवं मूल्यांकन संबंधी अपने संदेहो को लेकर शिक्षक से चर्चा अवश्य करनी चाहिए। इस विषय पर संवाद की कमी भी अनुशासन संबंधी समस्याओं की उत्पत्ति करती है।

14. विद्यार्थियों को सहगामी क्रियाओं में अवश्य भाग लेना चाहिए। इससे जहाँ उनकी अतिरिक्त ऊर्जा का सही उपयोग होता है वहीं उनमें सहयोग, समायोजन, सहभागिता जैसे गुणों का विकास होता हैं। जो अप्रत्यक्ष रूप से अनुशासन संबंधी समस्याओं पर अंकुश लगाने का कार्य करता है।

स्पष्ट है कि प्राचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी तथा अभिभावक प्रत्येक के लिए उनकी स्थिति के अनुसार अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन आवश्यक है। इसी तरह परिस्थिति अनुसार अनुशासन संबंधी हर समस्या हेतु कई उपाय एवं सुझाव हैं। यदि इन सभी पर कहीं मायने में अमल किया जाता है तो कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या को बहुत हद तक नियंत्रित करने में मदद मिल सकेगी।

## (5.7) भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :-

1. कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं को विस्तृत रूप से जानने के उद्देश्य से राज्य स्तर पर शोध संपन्न किये जा सकते है।
2. कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याएं : शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें: शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं: छात्रों और छात्राओं की अभिवृत्ति के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. कक्षा के शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करने वाले कारक, इस विषय पर अध्ययन किया जा सकता है।
6. विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि का उनके कक्षागत व्यवहार पर प्रभाव, इस विषय पर अध्ययन किया जा सकता है ।